Scanned by CamScanner

Book Details

Book Name	:	बहुभाषिकता विविध आयाम
Editors	:	डॉ. हर्षलता शाह डॉ. सरोज सिंह
Edition	:	2018
Pages	:	100
Book Size	:	CROWN
Price	:	Rs, 200/-
Printed by	:	Today Graphics 192 Bells Road Chepauk Chennai-5
Publisher	:	Today Publisher 192 Bells Road Chepauk Chennai-5
ISBN	:	98-93-87882-31-7

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

18	गोविन्द चातक के नाटक 'केकड़े' में बहुभाषिकता - के. विजया लक्ष्मी	78
19	हिंदी और तमिल भाषा का तुलनात्मक अध्ययन हिंदी भाषा - के. महालक्ष्मी	82
20	वैश्वीकरण और बहुभाषिकता - एस. राजलक्ष्मी	93
21	बहुभाषिकता के अनेकों रंग - डॉ. सरोज सिंह	95
22	भारत में बहुभाषिकता और बहु-सांस्कृतिकता - डॉ. के. आनंदी	98

Scanned by CamScanner

वैश्वीकरण और बहुभाषिकता

एस. राजलक्ष्मी
सहायक प्रवक्ता
लोयला कॉलेज, चेन्नई

आधुनिक तकनीक के विकास ने जसमस्त संसार (विश्व) को एक बना दिया है। भूमंडलीयकरण के कारण विश्व के अनेक देशओं में व्यापार बढ़चा जा रहा है। भूमंडलीयकरण की बढ़ती तेजी ने बाज़ारी शक्तियों को मजबूत बना दिया है। हमारे जीवन में बाजार के इस बढ़ते दखल ने उपभोक्तावाद नामक एक नई प्रवृत्ति को जन्म दिया है। बाज़ारवाद से ही उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिला है। वैश्वीकरण सीधा बाज़ारवाद से जुड़ा हुआ है। बाज़ार की प्रक्रिया सीधे भाषा से जुड़ी हुई है। बाज़ारी भाषा से ही विज्ञापन के रूप बनते और बिगड़ते हैं और समय के अनुरूप स्थायी हो पाते हैं। आज प्रत्येक देश चाहता है कि उसका माल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बिके, माल बाज़ार में बिकेगा तो उत्पाद बढ़ेगा, इस वैश्वीकरण उपभोक्ता व्यवस्था के तहत एक ओर यदि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं, सेवाओं तथा संसाधनों के मुक्त आदान-प्रदान की छूट मिलती है तो दूसरी ओर देश के लिए एक चुनौती दी है कि वह उसका सामना कैसे करें। जो भाषा जितनी उदार होगी और समय के अनुसार बदलती चली जाएगी वह उतनी ही लोकप्रिय होगी। आज किसी भी देशी-विदेशी कंपनियों को अपना कोई उत्पाद किसी भी बाज़ार में उतारना है तो उसकी नज़र हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर पड़ती है क्योंकि हिन्दी और कुछ अन्य भारतीय भाषाएँ आम आदमी, जनता के साथ-साथ उपभोक्ता की भी भाषा है जिससे हिन्दी और कुछ अन्य भारतीय भाषा का विकास विश्वस्तरीय हो रहा है।

भारतीय भाषाओं का वैश्वीकरण का केंद्रीय तत्व है - सूचना और ज्ञान का वैश्वीकरण, सरल वाणिज्यीकरण और अधिक तकनीकी आश्रित कार्यों का विकास वैश्वीकरण से उत्पन्न इन नई परिस्थितियों के कारण विश्व स्तर पर हिंदी और अन्य भाषाओं के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पड़ गई है। तथा अन्य भारतीय भाषाओं का विदेशी विश्वविद्यालयों में किया जा रहा है। दूर संचार माध्यमों, फिल्मी गीतों तथा पत्र-पत्रिकाओं में भारतीय भाषाओं की भूमिका मूल रूप से हो रही है।

Scanned by CamScanner